शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर : हिंदी विभाग

•हिंदी विभाग महाविद्यालय के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित विभागों में से एक है। हिंदी विभाग की गरिमा को 'अरपा पैरी के धार' छत्तीसगढ़ राज्यगीत, के रचनाकार समादृत साहित्यकार डॉ. नरेंद्र देव वर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' जैसे सिद्ध कवि–निबंधकार, प्रगतिशील आलोचक प्रमोद वर्मा, समालोचक राजेन्द्र मिश्र और श्री राजेश्वर गुरू जैसी शख्सियतों ने संवारा है। विभाग की स्थापना, निर्माण और विकास में इन विद्वान शिक्षकों की महती भूमिका रही है।

•महाविद्यालय में हिंदी विभाग की शुरुआत 1954 में हुई। आरंभ में स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर हिंदी साहित्य की कक्षाएं संचालित होती थीं।

•सन् 1975 के आसपास साइंस कॉलेज को 'आदर्श विज्ञान महाविद्यालय' का दर्जा मिलने के बाद स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाएं बंद हो गईं।

•वर्तमान में स्नातक स्तर पर आधार पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी भाषा का अध्ययन–अध्यापन जारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति NEP 2020 के अंतर्गत अब हिंदी भाषा साहित्य GEC एवं AEC के रूप में पढ़ाई जाती है।

•वर्तमान में हिंदी विभाग में श्री कौशिक कुमार विभागाध्यक्ष, डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर– सहायक प्राध्यापक, डॉ. स्वाति दुबे–अतिथि प्राध्यापिका के रूप में पदस्थ है।

•यहां से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों ने अकादमिक, प्रशासनिक, साहित्यिक, कॉरपोरेट सेक्टर, मीडिया, रंगमंच और सिनेमा के क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी सार्थक पहचान बनाई है।

•विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए हिंदी विभाग नियमित रूप से विविध गतिविधियों का आयोजन करता है :

1. विशेष व्याख्यान एवं गोष्ठियाँ : देश के ख्यातिनाम कवि, आलोचक, निबंधकार, मीडियाकर्मी एवं रंगमंच कलाकारों से विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को रू–ब–रू कराया जाता है।
2. रचनात्मक विकास : छात्रों के व्यक्तित्व विकास, रचनात्मकता तथा संप्रेषण कौशल को बढ़ाने हेतु शहर में आयोजित साहित्यिक समारोहों में सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
3. साहित्यिक प्रतियोगिताएँ : विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित की जाती है।

•सत्र 2025–26 में हिंदी विभाग में द्वारा अंतर्महाविद्यालयीन निबंध प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता,कविता प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया।

•हिंदी विभाग विद्यार्थियों को 'सारा आकाश' स्पर्श करने हेतु आमंत्रित करता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तियाँ विभाग का घोषणापत्र हैं :

''सेनानी करो प्रयाण अभय,

भावी इतिहास तुम्हारा है।

ये नखत अमा के बुझते हैं,

सारा आकाश तुम्हारा है।''